Research Guru
Online Journal of Multidisciplinary Subjects (ISSN : 2349-266X)
Volume-13, Issue-2, September-2019
www.researchguru.net
Impact Factor:4.081

बौद्धधर्म और डॉ.अम्बेडकर

नरेश रोहित

शोधार्थी(विद्यावाचस्पति), शिक्षण विद्याशाखा(IASE), गूजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद

E-mail: nrrohit1985@gmail.com Mo No-9727888556

सारांश: *आधुनिक भारत के चिन्तकों में, दार्शनिकों में सामाजिक क्रांतिकारियों मे डॉ.बाबासाहेब अम्बेडकर की अपनी एक अलग पहचान है, अपना एक अलग स्थान और महत्व है । डॉ.अम्बेडकर का व्यक्तित्व सभी से अलग है । वे व्यवस्थावादी नहीं थे। वे भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों और सिद्धांतो के आधार पर आधुनिक भारतीय नेताओं में चिन्तकों में क्रान्तिकारी परिवर्तन चाहते थे । इसलिए उन्होंने आधुनिक भारत में भारत की सदियों पुरानी सनातनी सड़ी गली समाजव्यवस्था को बदलने के लिए यहाँ के जातिभेद और अछूतपन को नष्ट करने के लिए धर्म, संस्कृति, विधि, आचार-विचार, राजनीति, सिद्धांत, जीवनमूल्य आदि के आधार पर हिन्दू धर्म के खिलाफ एक जबरदस्त वैचारिक आन्दोलन चलाया ।*

शब्द कुंजी: *दलितोद्धारक, बौद्धधर्म का स्वीकार, मनुष्य सर्वोपरी, बाईस प्रतिज्ञा, हिन्दुधर्म का त्याग, बौद्ध आंदोलन का सूत्रपात्र, सामाजिक-सांस्कृतिक विकास ।*

प्रस्तावना

आधुनिक भारत में हिन्दू धर्म, हिन्दू संस्कृति, हिन्दू दर्शन के खिलाफ जितना जबरदस्त और प्रभावी आन्दोलन डॉ. अम्बेडकरने चलाया उतना शायद ही किसी अन्य व्यक्तिने चलाया होगा । इसलिए आज भी कई हिन्दुत्ववादी लोग डॉ.अम्बेडकर को किसी भी रुप में बर्दास्त नहीं कर पा रहे है ।

डॉ.बाबासाहब अम्बेडकर अस्थापित, उत्पीडित, सर्वहारा वर्ग के सही प्रतिनिधि है और उनका दर्शन समूचे अस्थापित उत्पीडित, सर्वहारा वर्ग का दर्शन है । अम्बेडकरवाद की समुची भावना इसकी समुची माँग करती है कि दलित, शोषित, पिछडी, सर्वहारा समाज को ब्राहमणवादी और सामंती तथा पूंजीवादी शोषण से सम्पूर्ण मुक्ति मिले, यही उसकी प्रेरणा है और यही उसका लक्ष्य भी । अम्बेडकरवाद आम आदमी के मुक्ति की विचारधारा है ।

डॉ.अम्बेडकर : दलित और बौद्धधर्म

"मैं हिन्दु धर्म में पैदा हुआ यह मेरे बस की बात नहीं थी लेकिन मैं हिन्दू रहकर मरुंगा नहीं, यह मेरे बस की बात है । सन् 1936 में डॉ.अम्बेडकर ने यह प्रतिज्ञा की थी । और 14 अक्तूबर, 1956 को दीक्षा भूमि नागपुर से अपने लाखों अनुयाइयों के साथ विधिवत बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेकर उन्होंने अपनी इस प्रतिज्ञा को पूरा किया ।"

डॉ.अम्बेडकर द्वारा धर्मान्तरण की यह घटना भारतीय इतिहास की एक अनूठी और महान घटना थी जिसने भारतीय समाज को न केवल झकझोर कर रख दिया अपितु इस बात की चेतावनी भी दी कि धर्म के लाभ पर भोली भाली जनता का और अधिक समय तक शोषण नहीं किया जा सकता । क्योंकि धर्म मनुष्य के लिये होता है और इसका उद्देश्य होता है- मानव कल्याण । लेकिन जिस धर्म में उसके करोडों अनुयाइयों को कुत्तों और जानवरों से बदतर माना जाता हो, उनका मानवीय शोषण होता हो, जिस धर्म में एक व्यक्ति को जन्म के आधार पर श्रेष्ठ तथा दूसरे को हीन माना जाए वह धर्म नहीं है । वस्तुतः धर्म एक व्यवस्था है। लेकिन जो व्यवस्था अन्याय, शोषण, असमानता, अत्याचार, दमन और बर्बरता पर आधारित हो ऐसी व्यवस्था शोषक समाज के लिए तो उपर्युक्त हो सकती है लेकिन दलित, पीडित और शोषित व्यक्ति अथवा समाज के लिये कदापि उपर्युक्त नहीं हो सकती ।

डॉ.अम्बेडकर की मान्यता थी कि दुनिया में मनुष्य सर्वोपरी है, मनुष्य से बढकर कोई चीज नहीं है । धर्म मनुष्य के लिये है, वह मनुष्य के जीवन के उत्थान और विकास के लिये साधन मात्र है, जो धर्म मनुष्य के उत्थान और विकास में बाधक हो उसे बदला जा सकता है । दूषित और अनुपयुक्त वस्तु का त्याग

करना और अच्छी, स्वच्छ और उपर्युक्त वस्तु को ग्रहण करना समाज का गुण है । जैसे गन्दे और पुराने वस्त्र को त्यागकर नए और स्वच्छ वस्त्र पहने जाते है, उसी भांति यदि कोई धर्म दूषित हो, मनुष्य के लिए अनुपयुक्त हो तो उसे त्यागा जा सकता है और उसकी जगह ऐसे धर्म को स्वीकार किया जा सकता है जो मनुष्य के कल्याण की भावना से ओत-प्रोत हो, जिस धर्म में जन्म अथवा जाति के आधार पर किसी प्रकार की असमानता अथवा भेदभाव न हो तथा जो धर्म परस्पर प्रेम, सौहार्द और भ्रातृत्व को बढाता हो ।

भगवान बुद्ध ने कहा था - "जिस प्रकार अपने जीवन का खतरा उठाते हुए मां अपने शिशु की देख-भाल करती है, उसी प्रकार प्रत्येक व्यक्ति को सभी प्राणियों के प्रति अपार प्रेम प्रदान करने के लिए मन बनाना चाहिए । उसे सम्पूर्ण विश्व के प्रति सद् भावना रखनी चाहिए, उपर-नीचे और उस पार, सभी के लिए उसके मन में धृणाहीन और शत्रुतारहित अबाध प्रेम-होना चाहिए । ऐसी जीवन पद्धति विश्व में सर्वोत्तम है ।"[1]

बाबासाहेब ने कहा था कि -

"दुःख निवारण के लिए बौद्धधर्म का मार्ग ही सुरक्षित मार्ग है । बौद्ध धर्म पूर्णतः भारतीय है और गौतम बुद्ध न केवल भारत के उद्धारक थे, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के उन्नायक थे ।"[2]

14 अक्टूबर 1956 को बाबासाहेब अपने 5 लाख अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म ग्रहण किया और अछूतों में एक नये जीवन का संचार कर उनमें एक नयी उमंग पैदा कर दी ।

बाबासाहेब ने बाईस प्रतिज्ञा की । ये बाईस प्रतिज्ञा ही उन्हें एक सच्चे बौद्ध-भिक्षु के रुप में प्रकट करती है ।

ये बाईस प्रतिज्ञा निम्नलिखित है -

1. मैं ब्रह्म, विष्णु और महेश को कभी ईश्वर नहीं मानूंगा और न उनकी पूजा करुंगा ।
2. मैं राम और कृष्ण को ईश्वर नहीं मानूंगा और न कभी उनकी पूजा करुंगा ।
3. मैं गौरी, गणपति इत्यादि हिन्दू धर्म के किसी भी देवी-देवताओं को नहीं मानूंगा और न ही उनकी पूजा करुंगा ।
4. मैं इस पर विश्वास नहीं करुंगा कि ईश्वर ने कभी अवतार लिया है ।
5. मैं इसे कभी नहीं मानूंगा कि भगवान बुद्ध विष्णु का अवतार है । मैं ऐसे प्रचार को पागलपन का प्रचार समझूंगा ।
6. मैं श्राद्ध कभी नहीं करुंगा और न कभी पिंडदान करुंगा ।
7. मैं बौद्धधर्म के विरुद्ध कोई आचरण नहीं करुंगा ।
8. मैं कोई भी क्रिया कर्म ब्राहमणों के हाथों से नहीं कराऊगा ।
9. मैं इस सिद्धांत को मानूंगा कि सभी मनुष्य एक है ।
10. मै समानता की स्थापना के लिए प्रयत्न करुंगा ।
11. में भगवान बुद्ध के अष्टांग मार्ग का पूर्ण पालन करुंगा ।
12. मैं भगवान बुद्ध की बताई दस पारमिताओं का पूर्ण पालन करुंगा ।
13. मैं प्राणी मात्र पर दया रखुंगा और उनका लालन-पालन करुंगा ।
14. मैं चोरी नहीं करुंगा
15. मैं झूठ नहीं बोलूंगा ।
16. मैं व्यभिचार नहीं करुंगा ।
17. मैं शराब आदि कोई नशा नहीं करुंगा ।
18. मैं अपने जीवन को बौद्धधर्म के तीन तत्वों अर्थात् प्रज्ञा शील और समता पर ढालने का प्रयत्न करुंगा ।
19. मैं मनुष्य मात्र के उत्कर्ष के लिए हानिकारक और मनुष्य मात्र को असमान व नीच मानने वाले अपने पुराने हिन्दू धर्म का पूरी तरह त्याग करता हूं और बौद्ध धर्म को स्वीकार करता हूँ ।
20. मेरा विश्वास है की बौद्ध धर्म सद्धर्म है ।
21. यह मानता हूं कि मेरा पुनर्जन्म हो रहा है ।

22. मैं यह पवित्र प्रतिज्ञा करता हूं कि आज से मैं बौद्धधर्म की शिक्षा के अनुसार आचरण करुंगा ।

बाबासाहेब को अन्य धर्म ग्रहण करने के लिए भी प्रलोभन दिये गये लेकिन बाबासाहेब किसी प्रलोभन में नही आये और उन्होंने उसी धर्म को अपनाया जो जिसमें पाखण्ड एवं आडम्बर का कहीं नामोनिशान नहीं जो धृणा को त्यागकर प्रेम करना सीखता है ।

बाबासाहेब ने बौद्धधर्म हिन्दूओं से बदला देने या उनके प्रति धृणा के कारण नहीं अपनाया वे तो बौद्ध धर्म की समानता, न्याय, स्वतंत्रता से प्रभावित होकर उन्होंने ऐसा किया ।

सन् 1936 में ही उन्होंने एक तकरीर में यह ऐलान किया था कि 'मैंने सदा-सदा के लिए हिन्दू धर्म को त्यागने का फैसला लिया है । मेरा धर्म-परिवर्तन किसी भौतिक एवं लौकिक उपलब्धि के लिए कदाचित नहीं होगा, कोई ऐसी उपलब्धि शेष नहीं है, जिसे मैं हिन्दू अछूत रहते हुए प्राप्न न कर सकूँ । एक गहन आध्यात्मिक भावना के अतिरिक्त और एक आत्मिक संवेदना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है, जो मुझे धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित कर रही है । बतौर एक हिन्दू वह जीवन-भर जिए । मृत्यु से मात्र 2 माह पूर्व उन्होंने 'बौद्धधर्म' अपनाया था । उन्होंने बहुत तपड के साथ, दर्द भरे अंदाज में यह भी कहा था - "भारत को केवल राजनीतिक एकता की आवश्यकता नहीं है, वरन हृदय और आत्मा के एकत्व की भी आवश्यकता होती है ।" जिसे दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक-सामाजिक विकृतियों से तंग आकर उन्होने एक बार कहा था - "जो धर्म हमारी मनुष्यता की कुछ कीमत नहीं समझता, उस धर्म में हम क्यों रहे ? कितनी पीडा है इन शब्दों में बाबासाहेब का बौद्धधर्म - ग्रहण में उनका देश प्रेम भी उजागर होता है और वे समाज में समानता के कितने पक्षधर थे, इस बात का भी पता चलता है ।

नागपुर में अपने लाखों अनुयायियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा था, "आज मैं पुराने (हिन्दू) धर्म को त्यागकर (बौद्ध में) नया जन्म ग्रहण कर रहा हूँ। मैं अपना शेष जीवन मानव-जाति में समानता का प्रचार-प्रसार करने में लगाउँगा । धर्मान्तर के उपरांत पत्रकारों द्वारा यह पूछे जाने पर कि उन्होंने बौद्धधर्म जैसे मृत धर्म को ही क्यों अपनाया, बाबासाहेब ने कहा था, "धर्मांतर मैंने हिन्दुओं से बदला लेने या धृणा व्यक्त करने के उद्देश्य से नहीं किया । यदि मैं हिन्दुओं से बदला लेने के लिए ही धर्म परिवर्तन करता तो निश्चय ही इस्लाम या इसाई मत को चुनता और आने वाले पांच सालों में ही हिन्दू धर्म की ईंट से ईंट बजा देता । मेरा कदाचित ऐसा उद्देश्य नहीं था । बावजूद इसके कि इसने मुझे और मेरे समाज को अनगिनत कष्ट दिए है और आज भी दे रहे हैं । फिर देश के बाहर जन्में किसी धर्म को स्वीकार करने की आज्ञा मेरा राष्ट्र-प्रेम नहीं देता ।

बौद्ध धर्म की दीक्षा लेकर डॉ.अम्बेडकर ने न केवल भारत में मृतप्रायः बौद्ध धर्म को पुर्नजीवित किया अपितु नए सिरे से बौद्ध आंदोलन का सूत्रपात्र किया । जिसने भारतीय जनमानस को इतना अधिक प्रभावित किया कि देखते ही देखते लाखों लोग बौद्ध बन गए और देश में चारों और बौद्ध धर्म का पंचरंगा झण्डा फहराने लगा, भगवान गौतम बुद्ध की जयन्ती मनाई जाने लगी । यह डॉ.अम्बेडकर द्वारा शुरु किए गए बौद्ध आंदोलन का ही प्रभाव है कि आज भारत में बौद्ध धर्म के अनुयाईयों की संख्या करोडों से पता चलता है कि देश में बौद्धों की विकास दर में निरन्तर वृद्धि हो रही है और यह वृद्धि दूसरे धर्मावलम्बिय की तुलना में इसकी दर काफी उत्साहजनक है । यह इस बात की और संकेत है कि देश में एक समतामूलक समाज के निर्माण की दिशा में प्रगति हो रही है । इस सब का श्रेय निश्चित रुप से डॉ.अम्बेडकर को जाता है और जाना चाहिए क्योंकि जाति-विहिन और वर्ग-विहीन समाज की स्थापना उनका ही सपना था ।

डॉ.अम्बेडकर बौद्ध-धर्म से निश्चित रुप से उसकी श्रेष्ठता के कारण ही प्रभावित हुए थे लेकिन उनके द्वारा बौद्ध धर्म को ग्रहण करने के पीछे एक बहुत बडा कारण यह भी रहा कि बौद्ध धर्म श्रेष्ठ होने के साथ-साथ एक भारतीय धर्म है । यह भारत में भी उद्भूत और विकसित धर्म है । जबकि डॉ.अम्बेडकर के

अनुसार "बौद्धधर्म भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है ।" मैंने इस बात का ख्याल रखा है कि मेरे धर्म परिवर्तन से देश की परम्पराओं, संस्कृति और इतिहास पर आघात न पहुंचे । इसके अलावा डॉ.अम्ब की लोकतन्त्र में गहरी आस्था थी और बौद्ध धर्म लोकतांत्रिक प्रणाली का समर्थक है ।

इस प्रकार डॉ.अम्बेडकर द्वारा बौद्धधर्म की दीक्षा लेने की घटना न केवल भारत के राष्ट्रीय दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है बल्कि भारत के लिए अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी इस घटना का अत्यन्त महत्व है । क्योंकि डॉ.अम्बेडकर द्वारा बौद्धधर्म की दीक्षा लेने के कारण भारत के कई बौद्ध देशों से बडे घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुए जो कि राजनीतिक और सामाजिक दृष्टि से बहुत लाभदायक सिद्ध हुए है ।

इसके अलावा डॉ.अम्बेडकर द्वारा बौद्ध-धर्म की दीक्षा लेने से दलित अछूतों का सामाजिक उत्थान सम्भव हुआ तथा भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास को भी गति मिली । यद्यपि डॉ.अम्बेडकर द्वारा बौद्धधर्म की दीक्षा लेने की इस घटना को हुए अभी केवल तीन दशक ही हुए है लेकिन इसका महत्व और मूल्यांकन भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय वातावरण में गूंज रहा है और आशा है आगे और जोर से गूंजेगा ।

संदर्भ सूचि

1. कीर्ति, विमल (2006), **धर्म निरपेक्षता की आवश्यकता ।** कुनाल प्रकाशन, करतार नगर, दिल्ली ।
2. सांकृत्यायन, राहुल (2007), **आधुनिक संसार का महान व्यक्तित्वः डॉ.अम्बेडकर ।** साहित्य उपक्रम, दिल्ली ।
3. कर्दम, जयप्रकाश (2009), **डॉ.अम्बेडकर दलित और बौद्धधर्म ।** नवभारत प्रकाशन, दिल्ली ।
4. भारती, कंवल (2009) **समाजवादी अम्बेडकर ।** स्वराज प्रकाशन दरियागंज, नई दिल्ली ।
5. सारस्वत, माधवानंद (2010), **भारत के ज्ञान पुंज ।** प्रियंका प्रकाशन, लोहारु रोड, राजस्थान ।
6. कीर्ति, विमल (2011), डॉ.बाबासाहेब और उनका चिन्तन । लता साहित्य सदन, गाजियाबाद ।
7. चव्हाण, शेषराव और विसारीया, पुनीत । **अम्बेडकर की अन्तर्वेदना ।** एटलाटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, ((प्रा.) लि.दरियागंज, नई दिल्ली ।